

# डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 10, क्लोए के घराने से प्राप्त मौखिक विज्ञप्ति पर पौलुस का उत्तर , भाग 1, 1 कुरिन्थियों 1:10-4:21

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह व्याख्यान 10 है, क्लो के घराने से मौखिक विज्ञप्ति पर पॉल की प्रतिक्रिया - अध्याय 1, पद 10 से अध्याय 4, पद 21 तक।

खैर, हमारे 10वें वीडियो में आपका स्वागत है क्योंकि हम 1 कुरिन्थियों के बारे में सोच रहे हैं। आपके पास नोटपैड नंबर 7 होना चाहिए, जो कि वह नोटपैड है जो आपको 1 कुरिन्थियों 1, अध्याय 1, श्लोक 10, वास्तव में अध्याय 4, अध्याय के अंत तक की जानकारी देता है। अब, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण इकाई है क्योंकि हम 1 कुरिन्थियों के बारे में सोचते हैं क्योंकि इस विशेष इकाई के माध्यम से सोचना हमें इस बात पर बहुत अभ्यास कराएगा कि केवल एक पैराग्राफ या श्लोक के बजाय अध्याय 4 के अंत तक इस 1, 10 जैसी पूरी इकाई के बारे में कैसे सोचें।

मुझे डर है कि हमारे चर्च में कई बार, जब हम व्याख्यात्मक उपदेश जैसे वाक्यांशों का उपयोग करते हैं, तो मुझे यकीन नहीं है कि क्या यह वह भाषा है जो आपको परिचित है। मुझे उम्मीद है कि यह है, लेकिन यह विचार है कि जहां एक उपदेशक बाइबिल की एक पुस्तक के माध्यम से उपदेश देता है, उदाहरण के लिए, और वे व्याख्यात्मक होने के बारे में बात करते हैं। खैर, व्याख्यात्मक होने का क्या मतलब है? मैंने बहुत से लोगों को इसके बारे में बात करते हुए सुना है, और फिर वे एक बार में एक श्लोक का उपदेश देते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ किताबें हैं, जो प्रसिद्ध उपदेशकों के उत्पाद हैं, जैसे कि रोमियों के माध्यम से उपदेश देना, और जब आप उन्हें देखते हैं, तो वे इस श्लोक का उपदेश देते हैं, वे इस श्लोक का उपदेश देते हैं, वे उस श्लोक का उपदेश देते हैं।

मुझे खेद है, लेकिन यह रोमियों के माध्यम से प्रचार नहीं है। रोमियों में यह इकाई, यह इकाई, यह इकाई का प्रचार किया जाता है, और कभी-कभी उन इकाइयों में कई छंद लग सकते हैं, शायद कभी-कभी 10 या 20 छंद भी। बाइबल हमें ये बड़े विचार बताती है, जैसे 1901 के अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन बाइबल में, जहाँ आपको ये बड़े पैराग्राफ मिलते हैं।

आप कभी भी पैराग्राफ को तोड़ना नहीं चाहेंगे क्योंकि पैराग्राफ एक विचार है, और बाइबल में विचार देने के लिए साहित्यिक विधाओं का उपयोग करने के अलग-अलग तरीके हैं। और हम पहले ही 1 कुरिन्थियों में देख चुके हैं कि 1 कुरिन्थियों 11 हमें बताता है कि पॉल को क्लोए के घर से कुछ जानकारी मिली है, और वह उस पर प्रतिक्रिया करने जा रहा है, और वह इकाई 1 10 से शुरू होती है और अध्याय 4 के अंत तक जाती है, और हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम इसके बारे में समग्रता के रूप में सोचें, न कि केवल छोटे-छोटे वाक्यांशों की जाँच करें और इस मार्ग में विभिन्न श्रेणियों या विभिन्न छंदों के माध्यम से आगे बढ़ें। इसलिए, मैं आपको

चुनौती देना चाहता हूँ कि आप अध्याय 1 से 4 को एक इकाई के रूप में सोचें और उस इकाई के प्रत्येक भाग के दृष्टिकोण से सोचने का प्रयास करें जो एक अर्थ रखता है और पूरी इकाई से संबंधित है। हम इसी तरह से इसके बारे में सोचने जा रहे हैं।

मैं इसी तरह से आपको इस विषय पर मार्गदर्शन करना चाहता हूँ। अब, जब आप अपना होमवर्क करने और पढ़ने के लिए बैठते हैं, जैसा कि मैंने आपको बताया है, ऐसा करने का एक तरीका है टैलबर्ट की पुस्तक रीडिंग कोरिथियंस को पढ़ना। अब, यह एक सीमित मात्रा है।

यह मुख्य रूप से उस पाठ की संरचना को देखता है जिससे आप निपट रहे हैं। अब, हम हमेशा सहमत नहीं होंगे। कोई भी हमेशा इस पर एक राय से सहमत नहीं होता है, लेकिन कम से कम टैलबर्ट इकाइयों को देखने की कोशिश करता है, न कि केवल एक व्यक्तिगत छंद को, बल्कि यह भी कि इकाई के भीतर छंदों का क्या अर्थ है।

अध्याय 1 से 4 में, जिसे हम अभी देख रहे हैं, ब्रूस विंटर की पुस्तक, आफ्टर पॉल लेफ्ट कोरिथ, अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और मैं इन अध्यायों का अपना विश्लेषण इन दो व्यक्तियों के साथ शुरू करने जा रहा हूँ, और फिर मैं इसके अलावा कुछ और भी करूँगा। अब, हम 1 कुरिथियों के पाठ में प्रवेश कर चुके हैं, और हमें इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि मैं आपको जंगल में खोए बिना भारी मात्रा में सामग्री के माध्यम से ले जाने का प्रयास करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है, जंगल को देखने के लिए लेकिन पेड़ों को इस तरह से न देखें कि हम यह न समझें कि हम किस तरह के जंगल में काम कर रहे हैं। और इसलिए, प्रत्येक खंड के पैराग्राफ और छंदों के माध्यम से चलने के लिए, मैं आपका नेतृत्व करूँगा, और मैं आपको केवल व्यक्तिगत छंदों से अधिक संरचनात्मक मुद्दों को दिखाने का प्रयास करने जा रहा हूँ, भले ही हम निश्चित रूप से बहुत सारे वाक्यांशों और छंदों पर टिप्पणी करेंगे, लेकिन उनके संदर्भ में।

देखिए, इकाई का यह विचार संदर्भ का मुद्दा है। ठीक है, अब, सबसे पहले, मैं आपके नोट्स में पृष्ठ 53 के नीचे टैलबर्ट के इस पर विचार करना चाहता हूँ। वह सही ढंग से बताते हैं कि अध्याय 1:13 में तीन अलंकारिक प्रश्न हैं, और वे यहाँ हैं।

1:13 में, पॉल कहते हैं, और वैसे, यह एक पैराग्राफ के अंदर है। पैराग्राफ पद 10 से शुरू होता है और कम से कम पद 17 तक जाता है, लेकिन इसके अंदर, वह पद 13 में यह टिप्पणी करता है। क्या मसीह विभाजित हो गया है? क्या पॉल को आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था? या क्या आपको पॉल के नाम पर बपतिस्मा दिया गया था? ये तीन सवाल।

टैलबर्ट इन तीन अलंकारिक प्रश्नों के दृष्टिकोण से पूरे अध्याय 1 से 4 की संरचना को देखता है। और यदि आप पृष्ठ 53 के नीचे दिए गए चार्ट पर ध्यान देंगे, तो वह बताते हैं कि उत्तर उल्टे क्रम में आते हैं। पहला प्रश्न है, लेकिन अध्याय 1:14 से 16 में इसका उत्तर नहीं दिया गया है।

लेकिन तीसरा सवाल, क्या आपको पॉल के नाम पर बपतिस्मा दिया गया था? फिर, अध्याय 1:14 से 16 उत्तर देते हैं, क्या आपको पॉल के नाम पर बपतिस्मा दिया गया था? फिर, दूसरा, क्या पॉल आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था? और, ज़ाहिर है, जवाब नहीं है। और यह उत्तर टैलबर्ट के

अनुसार 117 से 34 में आता है। क्या पॉल आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था? और फिर वह उस उत्तर को खोलता है।

फिर, अध्याय 3:5 से 4:7 के अंत में, वह उत्तर देता है, क्या मसीह विभाजित है? तो, आपके पास तीन प्रश्न हैं, 1, 2, 3, और फिर आपके पास उत्तर हैं 3, 2, 1. अब, इसे चियास्म कहा जाता है। और जब आप टैल्बर्ट को पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि उसे चियास्म पसंद है, जहाँ आपके पास इस तरह की संरचना है, ए, बी, सी, और फिर सी, बी, ए। 1, 2, 3, 3, 2, 1, इसे आप उस संबंध में जो चाहें कहें। लेकिन आप देखेंगे कि यह बिल्कुल साफ नहीं है क्योंकि उसे 4, 8, से 21 को निष्कर्ष में शामिल करना है।

तो, यह काम की बात है, लेकिन यह शायद अंतिम शब्द न हो। लेकिन एक बात पक्की है, कि जब हम अध्याय 1 से 4 की समग्रता को देखते हैं, तो हम थोड़ी देर में देखेंगे कि अध्याय 2, 6 से अध्याय 2 का अंत इसके ठीक बीच में है और इस संबंध में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। अब, टैल्बर्ट द्वारा इसे देखने और आपको यह महसूस कराने के अलावा कि यह संरचना कैसे काम कर सकती है, और निश्चित रूप से यह इन सवालों के जवाब दे रही है, कम से कम उसके दृष्टिकोण से, विंटर के विश्लेषण का मुद्दा है।

अब याद रखें, ब्रूस विंटर ग्रीको-रोमन सामग्री के विशेषज्ञ हैं, और वे न्यू टेस्टामेंट के विद्वान हैं। वे आते हैं और इसे एक इकाई के रूप में देखते हैं। और उन्हें पता चलता है कि इस इकाई की कुंजी अध्याय 3, श्लोक 3 में है। मैं इसे आपके लिए पढ़ता हूँ। यह बहुत लंबा लग सकता है, लेकिन यह वह श्लोक है जो पूरी इकाई के लिए बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है।

3.3 में, और वास्तव में, यह वाक्य के ठीक बीच में है, वाक्य पद 2 में शुरू होता है, मैंने तुम्हें दूध पिलाया, ठोस भोजन नहीं, क्योंकि तुम ठोस भोजन के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए, अध्याय 3 में, पॉल वापस आ रहा है और विश्लेषण कर रहा है कि वह 1 और 2 में क्या कह रहा है, और इस पूरी इकाई की कुंजी अब सामने आती है। आप तैयार नहीं हैं, पद 3, क्योंकि आप अभी भी शरीर के हैं, क्योंकि जब तक आपके बीच ईर्ष्या और झगड़ा है, तब तक पहले के बयानों के सभी विभाजन हैं, क्या आप शरीर के नहीं हैं और मानव प्रवृत्तियों के अनुसार व्यवहार करना वह तरीका है जिससे RSV इसका अनुवाद करता है।

आइए NIV सुनें। यह आपके संस्करणों को प्रस्तुत करने के लिए एक अच्छी आयत है। अध्याय 3.3 में, RSV में, यह इस तरह से लिखा गया है: मैं क्षमा कर रहा हूँ; NIV में, आप अभी भी सांसारिक हैं।

वह पहले की इकाइयों में दुनिया की बुद्धि के बारे में बात कर रहे हैं, क्योंकि चूँकि आपके बीच ईर्ष्या और झगड़ा है, तो क्या आप सांसारिक नहीं हैं? क्या आप महज इंसानों की तरह काम नहीं कर रहे हैं? तो, पद 3 के इस वाक्यांश में कुछ दिलचस्प है, और यही वह जगह है जहाँ विंटर वापस आने और अध्याय 1 से 4 की पूरी इकाई का इस सुविधाजनक बिंदु से मूल्यांकन करने का ध्यान केंद्रित करता है कि सांसारिक होने का क्या मतलब है, सांसारिक बात करना। इस सांस्कृतिक संदर्भ की विशेषताएं इस वाक्यांश में बहुत अधिक परिलक्षित होती हैं लेकिन पूरी

इकाई की सामग्री में। पृष्ठ ५४ पर ध्यान दें, दूसरा पैराग्राफ, थीम पद जो अध्याय १ से ४ के इस सांस्कृतिक संदर्भ को नियंत्रित करने के लिए नोट किया गया है वास्तव में ३.३ है। यहाँ अंतिम प्रमुख वाक्यांश के कुछ प्रस्तुतीकरण दिए गए हैं

यही ग्रीक में है। लेकिन यहाँ ASV है, क्या तुम पुरुषों के तरीके से नहीं चलते? ध्यान दें कि वे कुछ वाक्यांश जोड़ रहे हैं, यह काटा एंथ्रोपोन, मनुष्य के अनुसार। आप पुरुषों के मानक के अनुसार कह सकते हैं, लेकिन यहाँ पुरुष सेक्स के मामले में पुरुष नहीं हैं, बल्कि मानवता है।

मनुष्य के लिए बड़ी श्रेणी में पुरुष, महिलाएँ, सृजित प्राणियों के सभी नौ गज शामिल हैं। क्या आप पुरुषों के तरीके से नहीं चलते? यही ASV है। 2011 का NIV कहता है, क्या आप मात्र मनुष्यों की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हैं? फिर हमारे पास फ़िल्ज़मेयर है, क्या आप धर्मनिरपेक्ष मानवीय तरीके से व्यवहार नहीं कर रहे हैं? अब, ध्यान दें कि फ़िल्ज़मेयर जिस तरह से पाठ को प्रस्तुत करता है, उसमें वह बहुत औपचारिक है, जिसमें मानवीय के साथ धर्मनिरपेक्ष शब्द भी शामिल है।

क्या आप धर्मनिरपेक्ष मानवीय तरीके से काम नहीं कर रहे हैं? और फिर विंटर आता है, और फी, क्या आप धर्मनिरपेक्ष तरीके से काम नहीं कर रहे हैं? यहाँ कुंजी है। इसलिए जब आप विभाजन के बारे में इस जानकारी को देखते हैं, जब आप इस नायक पूजा को देखते हैं, मैं पीटर का हूँ, मैं पॉल का हूँ, मैं अपोलो का हूँ, और फिर कोई ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में आध्यात्मिक है, कहता है, मैं मसीह का हूँ। और आप यह सारी जानकारी पढ़ रहे हैं, और क्रॉस का संदेश पूरी तरह से भ्रमित है।

क्या हो रहा है? खैर, इसका जवाब 3 में है। वे ईसाई धर्म के भीतर जो चल रहा है, उसे उजागर करने के लिए एक धर्मनिरपेक्ष तरीका अपना रहे हैं। वे ईसाई धर्म को अपने तरीके से डाल रहे हैं, बजाय इसके कि वे ईसाई तरीके से खुद को ढाल लें। और इसलिए, उन्होंने संदेश को गड़बड़ कर दिया है।

आप विंटर और टैल्बर्ट और अन्य दोनों में भूमध्यसागरीय शिक्षकों के बारे में पढ़ेंगे। पॉल भूमध्यसागरीय दुनिया का एक हिस्सा था। भूमध्यसागरीय शिक्षकों के रूप में, इन शिक्षकों का अपने छात्रों पर अधिकार था।

हम इस बारे में भी थोड़ी देर में बात करेंगे। शिष्य शब्द का इस्तेमाल छात्रों के लिए किया जाता था। और इसलिए, ये कुरिन्थवासी सुसमाचार को उंडेलने की कोशिश कर रहे थे, पौलुस की शिक्षा को उस तरीके से उंडेलने की कोशिश कर रहे थे जो उन्हें पसंद हो और जिससे वे परिचित हों, बजाय इसके कि वे पौलुस की शिक्षा को अपने तरीके से ढालें।

आप देखिए, पवित्रशास्त्र में, हमें अपने मन के नवीनीकरण के द्वारा परिवर्तित होना है, रोमियों 12. यह एक मानसिक कार्य है। हमें अपने सोचने के तरीके में परिवर्तन करना है।

खुद को सुसमाचार की सोच में बदलने की अनुमति देने के बजाय, कुरिन्थियों ने सुसमाचार को उस सोच के तरीके में बदलने की कोशिश की जिससे वे परिचित थे। यह एक बुरा तरीका था। यह रोमन तरीका था।

यह एक तरह से प्रतिस्पर्धा का तरीका था। यह अपने शिक्षकों की पूजा करने का एक तरीका था। हम देखेंगे कि यह पहले चार अध्यायों को कैसे प्रभावित करता है।

आइए पेज 54 पर विंटर के विश्लेषण के साथ आगे बढ़ते हैं। विंटर का इस वाक्यांश का विश्लेषण, धर्मनिरपेक्ष फैशन, या चलना, पुरुषों के अनुसार सिखाना। ग्रीक में शब्द, पेरिपेटियो, टेटे, जो मैंने आपको दिया है।

चलना एक रूपक है। यह इफिसियों की तरह है, जहाँ पुराने किंग जेम्स में चलने शब्द ने बहुत सारे उपदेशों की नींव रखी। लेकिन चलने का मतलब है जीवन जीने का एक तरीका।

आप मानवीय तरीके से जीवन जी रहे हैं। यह सुसमाचार का तरीका नहीं है, आप देखिए। ठीक है, तो सर्दी जारी है।

धर्मनिरपेक्ष शिष्यत्व अध्याय एक और चार में हम जो देखते हैं उसमें परिलक्षित होता है। यह ईसाई प्रतिस्पर्धा है। मेरे गुरु, आपके गुरु।

मेरा संदेश, आपका संदेश। पद के लिए यह सारी होड़ रोमन प्रतिस्पर्धा और कोरिंथियन संस्कृति का हिस्सा थी। इन नए ईसाइयों ने अपने ईसाई व्यवहार में एक धर्मनिरपेक्ष फैशन को अपनाया था, लेकिन सबसे पहले, अपने ईसाई विश्वदृष्टिकोण में।

वे रोमन कोरिंथ के विश्वदृष्टिकोण को सुसमाचार सामग्री पर लागू करने के लिए लाए, और इससे यह गड़बड़ हो गया। ठीक है, अब बुलेट पॉइंट्स पर ध्यान दें - शब्द शिष्य।

अब, मैं इसे स्पष्ट कर दूँ। आपको प्रथम कुरिन्थियों में शिष्य शब्द नहीं मिलेगा। वास्तव में, आपको नए नियम के किसी भी पत्र में शिष्य शब्द नहीं मिलेगा।

बाइबल में, नए नियम में, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक और चार सुसमाचारों में शिष्य शब्द का प्रयोग करते हैं। चूँकि यह प्रेरितों के काम की पुस्तक में है, इसलिए हम जानते हैं कि यह उस समय अवधि को कवर करता है जो इनमें से कुछ पत्रों के लेखन के साथ समकालीन थी, और कम से कम उस अभ्यास के साथ जो पत्रों में चल रहा था। इसलिए, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पत्रों में न होने वाले किसी शब्द का अति विश्लेषण न करें।

लेकिन शिष्य कुछ सांस्कृतिक रीति-रिवाजों में बंधे हुए हैं। आपको याद होगा कि सुसमाचारों में फरीसियों के शिष्य थे, और अब हमारे पास शब्द न बोलकर बल्कि अवधारणा के अनुसार, पीटर के शिष्य, अपोलो के शिष्य, पॉल के शिष्य, मसीह के शिष्य हैं। भले ही शब्द न हो, लेकिन ढांचा और सांस्कृतिक मानसिकता मौजूद है।

ग्रीको-रोमन दुनिया में शिष्य क्या होता था, चाहे वह फिलिस्तीन में हो या फिर बड़े रोमन दुनिया में? खैर, शिष्य शब्द उस दुनिया में काफी आम था। यह मूल रूप से किसी ऐसे व्यक्ति को इंगित करता था जो किसी दूसरे का प्रशिक्षु या छात्र था। उदाहरण के लिए, जब पॉल एक तंबू बनाने वाला था, तो उसके पास प्रशिक्षु होते थे, जिन्हें वह सिखाता था।

वे इसी तरह से व्यापार करते थे। आपने एक व्यापार सीखा। आपने एक व्यापार लागू किया।

आपने विद्यार्थियों को अपने साथ लिया। वे आपके शिष्य बन गए। वे आपके प्रशिक्षु बन गए, और आपने उन्हें वह व्यापार सिखाया।

खैर, यही बात सार्वजनिक भाषण के साथ भी सच थी। पहली सदी में भूमध्यसागरीय दुनिया में सार्वजनिक भाषण एक बहुत बड़ी बात थी। क्यों? खैर, उनके पास प्रिंटिंग प्रेस नहीं थी।

उन्हें प्रतियाँ वितरित करने का विशेषाधिकार नहीं था। चीजें मौखिक थीं, और मौखिक शक्ति का मतलब सब कुछ था। और इसके परिणामस्वरूप, कोरिंथ जैसे रोमन शहर में, उन्होंने इस मौखिक शक्ति के विचार को खरीद लिया था।

और वहाँ मौखिक वक्ता थे, और इन वक्ताओं के शिष्य या प्रशिक्षु होते थे। और वे अपने शिक्षक का आदर करते थे। यह सब उस सांस्कृतिक मिश्रण का हिस्सा है जो कुरिन्थ में चल रहा था और अध्याय एक से चार में परिलक्षित होता है।

जब हम दुनिया की बुद्धि के बारे में बात करते हैं, तो यह उसके नीचे होता है। जब हम दूसरे लोगों की पूजा करने की बात करते हैं, जैसे पॉल पॉल है, पीटर है, यहाँ तक कि मसीह भी है, तो यह उसके नीचे होता है। यह उस अवधारणा का हिस्सा है कि पहली सदी में एक प्रसिद्ध शिक्षक, एक प्रसिद्ध वक्ता का छात्र होने का क्या मतलब था।

ठीक है। इसलिए, चाहे सुसमाचार में हो या कहीं और, शिष्य को प्रशिक्षु के रूप में सोचना सबसे अच्छा है। आप देखिए, शिष्य का विचार, विशेष रूप से सुसमाचार में, और इसका कुछ हिस्सा जैसा कि सुसमाचार से प्रेरितों के काम में आता है, जब आप पत्रियों में आते हैं तो बदल गया था।

रूपक को बदल दिया गया, हालाँकि यह अभी भी अंतर्निहित है, और क्रिया का प्रयोग कुछ बार किया गया है, जिसका अर्थ है सिखाना। चित्र को भाइयों में बदल दिया गया और पत्रों के भीतर एक परिवार या संतानोचित चित्र के विचार में बदल दिया गया। वहाँ इसे इसी तरह संबोधित किया गया है।

इसका मतलब यह नहीं है कि यह संस्कृति में नहीं है, लेकिन यह कम से कम मौखिक रूप से इन बातों को कहने का एक अलग तरीका था। फरीसियों के शिष्य थे, यीशु के शिष्य थे, विभिन्न दार्शनिकों के शिष्य थे, और उस समय के विभिन्न शिक्षकों के शिष्य थे। इसका मतलब था कि वे प्रशिक्षु थे।

वैसे, सुसमाचारों में, आपको याद होगा कि यीशु के कुछ शिष्य थे जिन्होंने उनका अनुसरण करना छोड़ दिया था। सुसमाचारों के अध्ययन में शिष्य की अवधारणा को लेकर बहुत भ्रम है। सुसमाचारों में शिष्य का अर्थ मोक्ष के बराबर नहीं है।

यह एक प्रशिक्षु के बराबर है। यीशु का अनुसरण करने वाले ऐसे लोग थे जो अभी तक वास्तव में वे नहीं बने थे जिन्हें हम सच्चे आस्तिक कहते हैं, और इसका प्रमाण यह था कि उन्होंने यीशु का अनुसरण करना छोड़ दिया। वे प्रशिक्षु थे जिन्होंने आगे न बढ़ने का फैसला किया।

यह मोक्ष का शब्द नहीं था, बल्कि अनुयायी का शब्द था। यह तय करने के लिए कि अनुयायी सच्चा है या झूठा, बहुत अधिक संदर्भ की आवश्यकता होती है। बहुत सावधान रहें।

सुसमाचार के संबंध में शिष्यत्व के बारे में बहुत सी गलत समझ और शिक्षाएँ हैं। यह प्रभुत्व मोक्ष नामक विवादास्पद डोमेन में से एक में आता है, जहाँ बहुत से लोगों के पास बहुत से विचार हैं जो अपर्याप्त रूप से सूचित हैं - दूसरा बुलेट पॉइंट।

शिष्य की भूमिका अपने गुरु के पेशे के बारे में सीखना था। वह पेशा तम्बू बनाने का हो सकता है। यह सिविल सेवा, जैसे कि न्यायालय, भी हो सकता है।

यह इफिसियों की पुस्तक में वर्णित चांदी के काम जैसा व्यवसाय हो सकता है। उस समय, पहली सदी में, व्यापार संघ थे, और संघ अपने आप में सामुदायिक केंद्र थे। वे एक साथ रहते थे।

उनका अपना समुदाय था। लोगों को उनके गिल्ड के भीतर अपना अर्थ मिला। आप इसे हमारी संस्कृति में इस तरह से समझ सकते हैं जैसे कि अगर आप ट्रक चलाते हैं तो क्या आप टीमस्टर्स के सदस्य हैं, या अगर आप न्यूयॉर्क में इलेक्ट्रीशियन हैं तो क्या आप यूनियन के सदस्य हैं।

हमारी संस्कृति में यूनियनों के अर्थ और उपयोग के संबंध में अलग-अलग समय पर गिरावट आई है, लेकिन वे गिल्ड थे, और वे अभी भी कुछ स्थितियों में गिल्ड हैं। खैर, उनके पास पहली शताब्दी में यह था, और किसी गिल्ड से जुड़े रहना महत्वपूर्ण था। अमेरिका में हमारी संस्कृति में, अन्य प्रकार के गिल्ड हैं।

आपके पास अमेरिकन लीजन है, जो एक सैन्य संघ है। आपके पास मूस है। आपके पास मेसन हैं।

आपको ऐसे सभी तरह के क्लब मिल जाएंगे जहां लोग अपने समुदाय में अपना अर्थ ढूंढते हैं। यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है, भले ही आप इनमें से किसी भी संगठन के बारे में क्या सोचते हों। खैर, पहली सदी में, इनमें से ज्यादातर गिल्ड व्यापार के इर्द-गिर्द केंद्रित थे, और रोमन दुनिया में वक्ता और सार्वजनिक वक्ता होना एक तरह का व्यापार था।

इसलिए, शिष्यों की भूमिका अपने गुरु के पेशे को सीखना था। वह पेशा कोई भी हो सकता है। वक्तृत्वकला जैसे पेशे में, शिष्य नकल करना सीखता है।

याद रखें, थिस्सलुनीकियों में पौलुस ने कहा था, तुम भी मेरे जैसे बनो, जैसे मैं मसीह का अनुकरण करता हूँ। यह बात आपके शिक्षक का अनुसरण करने की पूरी अवधारणा को बढ़ावा देती है। बोलने के तरीके, व्यवहार संबंधी लक्षणों और यहाँ तक कि अपने दिखावे में भी अपने गुरु का अनुकरण करो।

पहली सदी में, किसी खास वक्तृत्व-कुशल व्यक्ति का शिष्य होना एक और मुद्दा था। इस बारे में वास्तव में जानकारी प्राप्त करने के लिए आपको ऐतिहासिक साहित्य में जाना होगा, लेकिन मुझे लगता है कि आप इसका विचार समझ सकते हैं - तीसरा बिंदु।

विंटर बताते हैं कि सोफिस्ट के नाम से जाने जाने वाले लोगों का पुनर्जागरण हुआ था। यह पहली सदी में शिक्षकों का एक समूह था। वास्तव में, उन्होंने इस पर एक किताब लिखी है, उन शीर्षकों में से जिन्हें आप आसानी से ब्रूस विंटर से प्राप्त कर सकते हैं।

इसे द्वितीय सोफिस्ट स्ट्रीट कहा जाता है। यह पहली शताब्दी में था। इस सोफिस्ट साहित्य में शिष्य शब्द का प्रयोग 181 बार किया गया है।

अब, मैं पहली सदी में उस विशेष संघ के बारे में बात करने जा रहा हूँ, लेकिन अगर आप चाहें तो यह कुरिन्थ में जो कुछ भी हो रहा था, उसके पीछे बहुत कुछ था। रोमन संस्कृति में शिष्य का यह प्रतिमान उस समय के वक्ताओं को प्रशिक्षित कर रहा था। ये वक्ता कई अलग-अलग सार्वजनिक स्थानों पर विभिन्न विचारों और मामलों पर बहस करते थे, चाहे वह अगोरा में हो, जो बाज़ार था, एक तरह की सार्वजनिक बोलने की जगह, चाहे वह सिविल कोर्ट हो या रोमन कानून के भीतर किसी अन्य स्तर की अदालत।

पहली सदी में वक्ता बनना एक प्रमुख करियर पथ था। एक महान वक्ता बनें। एक ऐसा व्यक्ति बनें जो दूसरों को एक निश्चित स्थिति के लिए राजी करे।

इससे आपको ताकत मिलती है। इससे आपको वह मिलता है जिसे वे सम्मान की भावना कहते हैं। यह स्टेटस के विचार का एक हिस्सा था।

ये सभी कुरिन्थियों की संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और आंतरिक हैं। इसके अलावा, पृष्ठ 54 पर अंतिम बुलेट में, रोमन कुरिन्थ में, वक्ता के कई लक्षण थे। इनमें से कुछ लक्षण क्या थे? अब, मैं अभी भी विंटर के लेख पर काम कर रहा हूँ, और आप इसे पढ़कर विचार प्राप्त कर सकते हैं।

पहली सदी में वक्ता के कुछ गुण क्या थे? शिक्षकों के बीच एक तीव्र व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा थी, जो उनके छात्र शिष्यों में भी व्याप्त थी। हम इसे बहुत देख सकते हैं। मैं पॉल का शिष्य हूँ।

मैं पतरस का शिष्य हूँ। मैं अपुल्लोस का शिष्य हूँ। मैं मसीह का शिष्य हूँ।

क्या आपको वहाँ प्रतिस्पर्धात्मकता नहीं सुनाई देती? और उस एक शिक्षक पर ध्यान केंद्रित करना, संभवतः उस एक शिक्षक की तरह व्यवहार करना और शायद उस विशेष शिक्षक की बयानबाजी की नकल करने की कोशिश करना। वैसे, अगर आपको कुछ गड़गड़ाहट सुनाई दे,



तो मैं फ्लोरिडा में हूँ, याद रखें, और वहाँ बारिश का मौसम है। इसलिए, अगर आप फिलीपींस या कहीं और हैं, तो आप समझ जाएंगे कि वहाँ क्या हो रहा है।

ठीक है, तो शिष्य की भूमिका अपने गुरु के काम को सीखना था। उनकी नकल करें, खास तौर पर वक्तृत्व कला में। एक तंबू बनाने वाले की नकल करना, वह कैसे सिलाई करता है और कैसे अपना काम करता है, यह एक बात है, लेकिन एक वक्ता की नकल करना बहुत अलग बात है।

यह उस स्तर तक जाता है कि लोग पहचान सकते हैं, ओह, वे फलां के छात्र हैं। सुनिए वह किस तरह से बोलता है। उसकी दलीलें सुनिए।

यह हमारी अपनी संस्कृति से बहुत अलग नहीं है, है न? जब आप किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के शिष्य होते हैं, तो आप अक्सर उनके गुणों को अच्छे या बुरे के लिए अपना लेते हैं। इसके अलावा, यह प्रतिस्पर्धा, यह पेशेवर प्रतिस्पर्धा अक्सर सम्मान पाने के लिए होती थी। लैटिन में, वे इसे डिग्रिटास कहते थे।

शहर की व्यवस्था में सम्मान प्राप्त करें। ब्रूस विंटर की एक किताब है सीक द वेलफेयर ऑफ द सिटी। यह शहर रोमन संस्कृति के केंद्र में था।

शहर के अमीर लोगों को पूरे शहर को बढ़ावा देना था, जिसका मतलब था कि उन्हें शहर के लिए अच्छा करना था, जिसमें शहर का हर नागरिक शामिल था। यह चीजों के प्रति साम्यवादी दृष्टिकोण नहीं था, बल्कि यह शहर के उन लोगों की देखभाल करने का एक तरीका था जो कम सम्मान या कम स्थिति वाले, कम साधन वाले थे, और यह सुनिश्चित करना था कि उनका ख्याल रखा जाए। यह, अगर आप चाहें, तो एक सामाजिक सुरक्षा शहर, सामाजिक सुरक्षा प्रणाली थी।

शहर वह व्यवस्था थी। यदि आप व्यवस्था में थे, तो आपका ख्याल रखा जाता था, और उस संस्कृति के भीतर इसकी संरचनाएँ थीं। इसलिए, सार्वजनिक वक्ता बनना और सम्मान प्राप्त करना शहर में सम्मान प्राप्त करना था।

साथ ही, यदि आप अपनी वक्तृत्व कला खो देते हैं, तो आप अपनी गरिमा खो सकते हैं, जो आपके विशेषाधिकार और शहर में आपकी प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकता है। अब, मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में सोचें। जब हम 1 कुरिन्थियों के विवरण में आते हैं, तो हम देखते हैं कि कुछ ईसाई जो स्थिति में प्रतीत होते हैं, या तो कभी-कभी उन लोगों को अनदेखा कर देते हैं जिनके पास स्थिति नहीं होती है, जैसे 1 कुरिन्थियों 11 में, और कैसे प्रभु के भोज को लागू किया गया था, या अध्याय 5 और 6 के मुद्दों में न्यायालय प्रणालियों में, या मानवीय संबंधों में और वे एक दूसरे से कैसे संबंधित थे, वे अभी भी एक धर्मनिरपेक्ष तरीके से काम कर रहे थे।

1 कुरिन्थियों 3:3 उनके सोचने के तरीके को प्रभावित कर रहा है। वे इसे अपने तरीके से कर रहे थे, न कि परमेश्वर के तरीके से। यह थोड़ा-बहुत उस गाने जैसा है जिसे मैं फ्रैंक सिनात्रा द्वारा गाया गया है और जिसे मैं सच में बहुत नापसंद करता हूँ।

मैंने इसे अपने तरीके से किया। यह अब तक लिखे गए सबसे धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक गीतों में से एक है। मैंने इसे अपने तरीके से किया।

खैर, यही तो कोरिंथियन कर रहे थे। वे इसे अपने तरीके से कर रहे थे। उनका तरीका रोमन तरीका था, सुसमाचार का तरीका नहीं।

पृष्ठ 54 के नीचे अगला बुलेट, कोरिंथ एक कुख्यात मुकदमेबाज समाज था। सत्ता पाने, प्रतिष्ठा पाने, शहर में जो भी तरह का सम्मान पाने के लिए सब कुछ अक्सर अदालतों में होता था। अदालतें हमारी अदालतों की तरह नहीं थीं, बिल्कुल भी अमेरिकी अदालतों या अंग्रेजी अदालतों की तरह नहीं थीं।

मैं दुनिया के उन सभी न्यायालयों के बारे में नहीं जानता, जहाँ से आप आते हैं। ये न्यायालय एक वक्ता की शक्ति के इर्द-गिर्द घूमते थे, जिसके ज़रिए वह न्यायाधीशों को प्रभावित करता था, तथाकथित जूरी जिन्हें अक्सर खरीदा और स्थापित किया जाता था, ताकि वक्ता द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले व्यक्ति के लिए निर्णय प्राप्त किया जा सके। इससे उस व्यक्ति को प्रतिष्ठा प्राप्त होती थी।

अगर वह वक्ता हार जाता है, तो उस व्यक्ति का रुतबा भी चला जाता है। लेकिन यह सब सार्वजनिक भाषण और दर्शकों को प्रभावित करने की क्षमता से जुड़ा है। कोरिंथ में मुकदमेबाजी बहुत ज़्यादा होती थी।

रोमन शहर और रोम खुद मुकदमेबाजी के लिए कुख्यात थे। उस तरह की संस्कृति में सार्वजनिक भाषण जीत का एक तरीका था। उस समय के वकील, भले ही वे रोमन कानून के आधार को जानते हों, उनकी सफलता और उनकी प्रसिद्धि न्यायाधीशों और जूरी को अपने विश्वास में लाने के लिए राजी करने और वक्तृत्व का उपयोग करने की उनकी क्षमता से संबंधित थी।

इस वक्तृत्व संरचना और संस्कृति का एक हिस्सा जो प्रतिद्वंद्विता थी, वह इतनी बुरी थी कि रोम को वास्तव में रोमन शहरों के भीतर जो कुछ भी चल रहा था उसके इतिहास में हस्तक्षेप करना पड़ा। पृष्ठ 55 पर, शीर्ष बुलेट, शिष्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने शिक्षकों के प्रति अनन्य निष्ठा रखें। अब अध्याय 1 से 4 में उन पहले के अंशों को फिर से सुनें, और मुझे आशा है कि आपने इसे पढ़ने से पहले इसे पढ़ लिया होगा।

मैं पॉल का हूँ। मैं अपोलोस का हूँ। मैं पीटर का हूँ।

मैं मसीह का हूँ। असली धर्मपरायण लोग तो यहीं हैं, है न? शिष्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे जिस गुरु से जुड़े हैं, उसके प्रति अनन्य निष्ठा रखें। वे प्रतिद्वंद्विताएँ, वे विभाजन, वे सांसारिक कार्य कर रहे थे।

सांसारिक व्यवहार करने का क्या मतलब है? इसका मतलब है सांसारिक तरीके से व्यवहार करना। दुनिया की तरह होने का मतलब है अपनी सेटिंग की तरह होना। मैं यहाँ एक उदाहरण का उपयोग करूँगा।

मैंने यह बात एक उपदेशक से सुनी थी जो मुझे बहुत पसंद था। उसने यह मुहावरा इस्तेमाल किया। उसने कहा कि ईसाई बनने से पहले मैं चीज़ों से प्यार करता था और लोगों का इस्तेमाल करता था।

ईसाई बनने के बाद, मुझे पता चला कि मुझे लोगों से प्यार करना चाहिए और चीज़ों का इस्तेमाल करना चाहिए। चीज़ों से प्यार करो, लोगों का इस्तेमाल करो। लोगों से प्यार करो, चीज़ों का इस्तेमाल करो।

दो प्रमुख भिन्न विश्व दृष्टिकोण। अमेरिका में एक धर्मनिरपेक्ष विश्व दृष्टिकोण चीज़ों से प्यार करना और लोगों का उपयोग करना है। एक ईसाई विश्व दृष्टिकोण लोगों से प्यार करना और चीज़ों का उपयोग करना है।

विश्वदृष्टि में बड़ा अंतर। शिष्यों को अपने शिक्षकों के विश्वदृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करना था। और उन्होंने इसे इतना गड़बड़ कर दिया कि वे इन व्यक्तियों के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बातों से चिपक गए।

और व्यक्तित्व बड़ा था और वक्तृत्व, आप देखिए। और वे खुद को उससे जोड़ते थे। यही विभाजन था।

यही इन विभाजनों की मूल भावना है। ऐसा नहीं है। हालाँकि हम अपनी संस्कृति में समानताएँ ढूँढ़ सकते हैं, लेकिन वे हमारी संस्कृति नहीं हैं। यह अमेरिका में मेरी संस्कृति नहीं है।

हां, कुछ समानताएं हो सकती हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि यह एक रोमन संस्कृति थी, और सब कुछ वक्ता की शक्ति पर निर्भर करता था। उनमें से कुछ के लिए कट्टरपंथी शब्द का इस्तेमाल किया गया था। यहाँ, कट्टरपंथी का मतलब अपने शिक्षक और उसके विचारों के प्रति बेहद वफादार होना है।

यार, यह अध्याय एक से चार तक है, जो इसके मूल तक है। ब्रूस विंटर ने एक अध्याय तीन से इस मुद्दे को एक धर्मनिरपेक्ष तरीके से पेश किया है। तो पद्य अध्याय, या क्षमा करें, पृष्ठ 55।

इसलिए, जब पौलुस ने कुरिन्थियों पर धर्मनिरपेक्ष तरीके से जीने का आरोप लगाया, तो वे वास्तव में उसी तरीके से जी रहे थे जो उन्होंने अपनी संस्कृति में सीखा था। उनमें से कुछ शायद शहर की गरिमा हासिल करने में गहराई से डूबे हुए थे। हम 1 कुरिन्थियों के पाठ को देखते हुए देख सकते हैं कि कुछ लोग साधन संपन्न थे।

बहुत से ईसाई ऐसे थे जिनके पास वे साधन नहीं थे, और उनमें प्रतिद्वंद्विता चल रही थी। वे जिस दुनिया में रहते थे, उसके अनुसार व्यवहार कर रहे थे। अगर वे दूसरी जीवनशैली चुनते तो उन्हें बहुत कुछ खोना पड़ता।

दूसरे शब्दों में, जिन लोगों को कुरिन्थ में यह सम्मान और दर्जा प्राप्त था, अगर वे पौलुस द्वारा सिखाई गई नैतिकता को अपनाते, तो उनकी शक्ति, धन और प्रभाव कम हो सकते थे। यह कठिन है। उन्हें यह परिवर्तन करने में कठिनाई हो रही थी।

हम कह सकते हैं कि वे स्वाभाविक रूप से कार्य कर रहे थे, लेकिन स्वाभाविक रूप से ईसाई धर्म नहीं है। विंटर के अनुसार, पृष्ठ 42 से 43 में पॉल ने कम से कम पाँच तरीकों से इसे उलट दिया है, और वे यहाँ हैं। नंबर एक, पॉल, अपोलोस या पीटर जैसे व्यक्ति के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा के विपरीत, सभी विश्वासी मसीह के प्रति वफादारी में एक हैं, अध्याय 3, श्लोक 21 से 23।

अब इन आयतों को सुनें, अध्याय 3:21 से 23, इस बात के प्रकाश में कि हम यहाँ वक्ताओं के प्रति वफादारी के प्रतिमान के संदर्भ में क्या निर्माण कर रहे हैं और इसी तरह। मैं न्यू रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्शन से पढ़ रहा हूँ। इसलिए, किसी को भी मानव नेताओं के बारे में घमंड नहीं करना चाहिए।

वाह। क्या आप इसे समझने लगे हैं? देखिए, अगर आप इसे सतही तौर पर पढ़ते हैं और रोम में रहने के बारे में कुछ नहीं सोचते हैं, तो आप अपनी संस्कृति की प्रतिस्पर्धात्मकता से कुछ समानताएँ ला सकते हैं, लेकिन अगर आप अपने दिमाग को पहली सदी के कुरिन्थ में वापस नहीं लाते हैं, तो आप इसे वैसे नहीं समझ पाएँगे जैसा आपको समझना चाहिए। क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है, चाहे पॉल, या अपुल्लोस, या कैफा, या जीवन की दुनिया, या मृत्यु, या वर्तमान, या भविष्य, सब तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।

प्रतिद्वंद्विता से छुटकारा पाएँ। अपनी झूठी वफादारी से विभाजन करना छोड़ दें। हम सब मसीह के हैं, और हम सभी को मसीह के प्रति समर्पित होना चाहिए, इन सभी छोटी-छोटी चीज़ों के प्रति नहीं।

दूसरा, विश्वासियों की भूमिका कार्यात्मक कार्यों के लिए है, न कि स्थिति के लिए। कार्यात्मक कार्य, स्थिति के लिए नहीं। तीन, पाँच से सात तक सुनें।

तो फिर, अपोलोस क्या है? पॉल क्या है? सेवक जिनके माध्यम से आप विश्वास करने लगे। मनुष्य, और फिर अध्याय चार में बताया जाएगा कि सेवक होने का क्या मतलब है। सेवक।

मुझे नहीं पता कि मैं इस दृष्टांत को उतना ही अच्छी तरह से फिर से बना सकता हूँ जितना मैं चाहता हूँ, लेकिन मैं एक संकाय का हिस्सा था, और प्रशासन ने मार्केटिंग के लिए एक वाक्यांश के साथ आने के लिए मार्केटिंग के लोगों के एक समूह को काम पर रखा था। मेरी राय में यह हमेशा एक बुरा विचार है, लेकिन फिर भी, उन्होंने इसे किया, और वे अपने शानदार परिणामों को प्रस्तुत करने के लिए उन्हें एक संकाय बैठक में ले आए, और वे नेताओं और सेवकों के विचार के साथ आए, और उन्होंने जो किया वह यह था कि उनके पास एक निश्चित क्रम था, और उन्होंने

नेता को पहले और सेवक को दूसरे स्थान पर रखा, और उन्होंने इन लोगों को भुगतान करने में संभवतः हजारों डॉलर खर्च किए थे, और वे इसके साथ आए, और एक संकाय के रूप में, हम वहाँ बैठे, और हमने उन्हें बताया कि आप पहले एक नेता से पहले एक सेवक नहीं हैं। आप पहले एक सेवक से पहले एक नेता हैं।

यही ईसाई तरीका है और धमाका, उन्हें यह समझ में आ गया, लेकिन वे उस कमरे में जाने से पहले इसे कभी नहीं समझ पाए क्योंकि वे धर्मनिरपेक्ष तरीके से सोच रहे थे। सत्ता पहले आती है, और फिर सेवा। नहीं, ईसाई विश्वदृष्टि में, सेवा पहले आती है, और फिर शक्ति।

उन्होंने कुरिन्थ में सब कुछ गड़बड़ कर दिया था। वे सांसारिक सोच रहे थे। वे धर्मनिरपेक्ष तरीके से सोच रहे थे।

वे बाइबल की नैतिकता के बजाय रोमन कुरिन्थ की नैतिकता का पालन कर रहे थे, और हर बार जब आप ऐसा करते हैं, तो आप बड़ी मुसीबत में पड़ जाते हैं। तीसरी बात। विश्वासियों को अपने नेताओं को सेवकों, परमेश्वर के रहस्यों के भण्डारी के रूप में देखना चाहिए, जैसा कि पॉल 4:1-4 में कहता है। 2:1 से 5 में पॉल का कथन रोमन संस्कृति के शिक्षक-शिष्य के भाव के शक्ति नाटकों को कमज़ोर करता है।

पौलुस उनसे कहता है, "मैं तुम्हारे पास शक्ति प्रदर्शन के लिए नहीं आया हूँ। मैं मसीह के क्रूस के साथ तुम्हारे पास आया हूँ। ऊपर जाने का एकमात्र रास्ता नीचे की ओर है।"

कोरिंथ का मानना था कि ऊपर जाने का एकमात्र तरीका दूसरों के ऊपर से धक्का देकर ऊपर जाना है। उन्होंने इसे उल्टा कर दिया। यहाँ क्या हो रहा है, इस पर विचार करें।

आप मेरे नोट्स पढ़कर और जो मैं आपको बता रहा हूँ उसे सुनकर इसमें शामिल हो सकते हैं, लेकिन वास्तव में इसमें शामिल होने के लिए, आपको अपना कुछ होमवर्क करना होगा। जो चीज़ें मैं आपको पढ़ने के लिए कह रहा हूँ उन्हें पढ़ें - नंबर पाँच।

पॉल ने शिष्य की छवि को बदल दिया है, जिसे रोमन संस्कृति में पुत्रवत परिवार की छवि के रूप में समझा जाएगा। माफ़ करें। मुझे यह फिर से कहना चाहिए क्योंकि मैं अपने कोष्ठकों को सही जगह पर नहीं लगा पाया।

पॉल ने शिष्य की छवि को बदल दिया। यही वह छवि है जो रोमियों के पास थी। वास्तव में, आप जानते हैं, अगर हम यह सवाल पूछें कि दुनिया में हमारे पास पत्रों में शिष्य शब्द क्यों नहीं है? खैर, पत्रियाँ प्रमुख हैं, उनमें से सभी नहीं, लेकिन प्रमुख रूप से इसलिए क्योंकि पॉल ने सबसे ज़्यादा नहीं लिखा, लेकिन उसने सबसे ज़्यादा व्यक्तिगत पत्र लिखे, और वे रोमन दुनिया में मौजूद हैं।

वह शिष्य शब्द का प्रयोग नहीं करता। वह पुत्रवत, पारिवारिक छवि का प्रयोग करता है। यह उन शहरों में रहने वाले कई लोगों के लिए एक नया विचार रहा होगा।

पॉल ने शिष्य की छवि को, यानी रोमन छवि, प्रशिक्षु से बदलकर पारिवारिक छवि बना दिया है। यह अलग है। यह एक नई विश्वदृष्टि से, एक अलग नैतिकता से चीजों को देखना है।

परिवार में, आप सदस्यों को पीटकर प्रमुखता हासिल नहीं करते। आप बाकी सदस्यों को ऊपर उठाकर प्रमुखता हासिल करते हैं। पॉलिन साहित्य में शिष्य संज्ञा का कभी प्रयोग नहीं किया गया है।

भाइयों शब्द, जिसमें बहनें, प्यारे भाई और बहनें शामिल हैं, का इस्तेमाल 29 बार किया गया है। पौलुस उनके पिता होने की छवि का इस्तेमाल करता है। वह इस छवि का इस्तेमाल उनके वक्तृत्वपूर्ण उदाहरण होने के अर्थ में नहीं करता।

रूपक बदल गया है। संज्ञा शिष्य सुसमाचार और प्रेरितों के काम के अलावा नए नियम में कभी नहीं आता है। दिलचस्प है।

मुझे लगता है कि सुसमाचारों में, थोड़ी अलग बारीकियाँ हैं, भले ही यह अभी भी एक छात्र और एक शिक्षक होने की ग्रीको-रोमन बारीकियाँ हैं। लेकिन जब हम पत्रों में जाते हैं, जो मुख्य रूप से इस ग्रीको-रोमन दुनिया से जुड़े हुए हैं, तो पॉल एक शिष्य, एक प्रशिक्षु के धर्मनिरपेक्षीकरण और उसके भाषण प्रभाव की उनकी कल्पना से बचते हैं। वह बस इसका उपयोग नहीं करता है।

तो, ये दो मुख्य बातें हैं जिनके बारे में सोचना चाहिए। टैल्बर्ट हमें तीन सवालों के जवाब देते हुए वह चियासम देता है। यह अच्छा है, लेकिन आप कुरिन्थ में जो कुछ भी हो रहा है, उसके अर्थ में तब तक नहीं जा पाएंगे, जब तक आप यह नहीं समझ जाते कि हम जो प्रतिद्वंद्विता और विभाजन और ईर्ष्या और झगड़े देख रहे हैं, वे इसलिए हैं क्योंकि लोग अपने दिमाग को नवीनीकृत करके परिवर्तित नहीं हो रहे हैं।

वे ईसाई विचारों को लेकर उन्हें धर्मनिरपेक्ष फैशन, धर्मनिरपेक्ष विश्वदृष्टि के रूप में ढालने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके वे इतने आदी थे। याद रखें, क्या मछली को गीलापन महसूस होता है? उन्हें गीलापन महसूस नहीं हुआ। उन्हें लगा कि वे सही काम कर रहे हैं, क्योंकि वे अपने मन के नवीनीकरण से परिवर्तित नहीं हुए थे और जो विश्वदृष्टि उनके पास आ रही थी, उसे स्वीकार नहीं किया था, हालाँकि वह बहुत नई थी, ऐसा करना बहुत मुश्किल होता।

यह एक बड़ा प्रतिमान परिवर्तन था। अब, जब हम सुसमाचार को दुनिया में ले जाते हैं, तो ज्यादातर समय हम एक बड़े प्रतिमान परिवर्तन की मांग करते हैं। एक पल के लिए सोचें।

मान लीजिए, मैं सड़क पर चल रहा हूँ। मैं यह पोर्श, पोर्श या जो भी आप कहना चाहते हैं, देख रहा हूँ।

मैं इसे पोर्श कहूँगा। और यह फैंसी, महंगे कपड़े पहने हुए आदमी जिसके शरीर के हर हिस्से से सोना लटक रहा है, या उसका शरीर, कार से बाहर निकलता है। और मैं इस वाहन के पीछे के बम्पर को देखता हूँ, और यह बहुत ही दिखावटी व्यक्ति है और बम्पर स्टिकर यह कहता है, जो सबसे अधिक खिलौनों के साथ मरता है वह जीतता है।

इसके बारे में सोचो। यह एक विश्वदृष्टि है। यह एक बहुत ही, अगर आप चाहें तो, अमेरिकी, पश्चिमी संस्कृति, शक्ति, धन, विश्वदृष्टि है।

जीवन के बारे में उनका दृष्टिकोण चीजों को प्राप्त करना है। लोगों का उपयोग करें, चीजें प्राप्त करें। इन सभी चीजों को अपने लिए अर्जित करें, और आप इसे प्राप्त कर लेंगे।

और वह व्यक्ति कार के चारों ओर घूमता है। मुझे उसकी आँखों में देखना पसंद है, और मुझे ऐसा करने का मौका नहीं मिला है क्योंकि आमतौर पर कारें सड़क पर होती हैं, और आप उन्हें कुचल नहीं सकते। लेकिन मैं उसकी आँखों में देखना चाहता हूँ और उनसे कहना चाहता हूँ, वाह, मुझे नहीं पता था कि मरना जीतना है।

और वे आपकी तरफ़ ऐसे देखेंगे, जैसे कि, आप मेरे बम्पर स्टिकर की बात समझ नहीं पाए। ऐसा नहीं है कि मैं मरना चाहता हूँ। बल्कि मैं ये सारे खिलौने पाना चाहता हूँ।

और फिर मैं उनकी तरफ़ देखता हूँ और कहता हूँ, हाँ, लेकिन तुम मरने वाले हो, है न? तुम्हारा दरवाज़ा वहाँ है। उसमें से चलो। आप देखिए, जब हम दुनिया में सुसमाचार फैलाते हैं जैसे पॉल ने पहली सदी में किया था, तो हमें उन लोगों की मानसिकता से जुड़ना होगा जिनसे हम बात कर रहे हैं।

अब, यह आसान नहीं है। इसके लिए कुछ शैक्षिक समय की आवश्यकता होती है। इसके लिए कुछ बुद्धिमानीपूर्ण पढ़ने और सोचने की आवश्यकता होती है और ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो आपकी किसी भी संस्कृति में ऐसा करने में आपकी मदद कर सकें।

आपकी संस्कृति में काम करने का एक धर्मनिरपेक्ष तरीका है। यह एक धार्मिक संस्कृति हो सकती है, लेकिन फिर भी यह अपने अधिकार के अनुसार काम करने का अपना तरीका रखती है। और आप उस संस्कृति में ईसाई सत्य लाते हैं, और यह दो चीजों को एक साथ मिलाने जैसा है।

आप देखिए, सुसमाचार प्रचार और शिक्षा का संबंध यहीं से है। मन। जैसा व्यक्ति अपने दिल में सोचता है, वैसा ही वह होता है।

बाइबल में हृदय शब्द का प्रयोग भावनात्मक शब्दों में नहीं किया गया है। यह पश्चिमी संस्कृति है। ओह, मैं तुम्हें पूरे दिल से प्यार करता हूँ।

यह हमारी संस्कृति में एक भावनात्मक कथन है। बाइबल में यह कहा गया है कि मैं तुम्हें अपने पूरे दिल से प्यार करता हूँ। मैं तुम्हें अपने पूरे विचारशील अस्तित्व से प्यार करता हूँ।

बाइबल में हृदय मुख्य रूप से एक ऐसा शब्द है जो भावनात्मक क्षेत्र से नहीं, बल्कि तर्कसंगत क्षेत्र से संबंधित है। स्लॉकना, जो झुकने के लिए ग्रीक शब्द है। आपको किंग जेम्स संस्करण में वह वाक्यांश याद होगा, करुणा के झुकने।

यह एक भावनात्मक बात है। लेकिन प्रभु यीशु मसीह पर अपने पूरे दिल से विश्वास करना स्लंकना नहीं है। यह प्रक्रिया और समझने के लिए दिमाग है।

इसलिए, यदि आप सुसमाचार का प्रचार करने जा रहे हैं जैसा कि यीशु और प्रेरितों ने इरादा किया है, तो आपको वैसा ही सोचना होगा जैसा वे चाहते हैं कि आप सोचें। आपको नया होना होगा, अपने मन में बदलाव लाना होगा क्योंकि जब आप इस बदलाव को अपना लेंगे, तो बाकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा। आप सबसे ज्यादा खिलौनों के साथ मरने वाली महिला से हटकर दुनिया के साथ अपने खिलौने बाँटने और उन्हें अपने साथ चलने में मदद करने की ओर बढ़ते हैं।

हमारे सोचने के तरीके और जीवन में लागू होने वाली नैतिकता में बदलाव। लोगों से प्यार करें, चीज़ों का इस्तेमाल करें, चीज़ों का इस्तेमाल न करें, लोगों का इस्तेमाल न करें और चीज़ों से प्यार करें। यह सोचने का एक बिल्कुल अलग तरीका है।

इसलिए, जब आप सुसमाचार को लेते हैं, चाहे वह अमेरिका में हो, जो इन दिनों लगभग पूरी तरह से एक बुतपरस्त राष्ट्र है, हमारे पास चर्च की बहुत अधिक उपस्थिति हो सकती है। हम खबरों में हो सकते हैं।

राजनीति में इवेंजेलिकल शब्द को भी एक शक्तिशाली शब्द माना जाता है। लेकिन छह बजे की खबरों में आम आदमी यह भी नहीं बता सकता कि ईसाई होने का क्या मतलब है या इवेंजेलिकल शब्द के अच्छे हिस्से क्या हैं। उन्हें इसका कोई अंदाजा नहीं है।

मैं उनकी बातें सुनता हूँ, और वहाँ बैठकर सोचता हूँ कि काश मैं उस स्टूडियो में जाकर कह पाता, क्या तुम्हें पता है कि तुम कितने अज्ञानी हो? मैं तुम्हें बताता हूँ कि इसका क्या मतलब है। ऐसा महसूस होता है जैसे पॉल एथेंस में चल रहा हो। अज्ञात ईश्वर के बारे में यह बात।

मैं तुम्हें यह समझाऊंगा। मेरी बात सुनो। खैर, पॉल एक ऐसी दुनिया में चला गया, जिस तरह हम सभी अपनी दुनिया में चलते हैं।

धर्मनिरपेक्ष फैशन और धर्मनिरपेक्ष मानसिकता के अनुसार काम करने वाली दुनिया। हमें लोगों के सोचने के तरीके को बदलना होगा ताकि लोगों के काम करने के तरीके को बदला जा सके। यह उल्टा नहीं है।

आप सोच बदलने के लिए व्यवहार नहीं बदलते। आप व्यवहार बदलने के लिए सोच बदलते हैं। बाइबल उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक इस विषय पर सुसंगत है।

हम 1 कुरिन्थियों 13 में प्रेम के विचार के अंतर्गत इस बारे में थोड़ी बात करने जा रहे हैं। आपको तब तक इंतजार करना होगा जब तक हम वहाँ नहीं पहुँच जाते। यह मेरे द्वारा किए जा रहे व्याख्यान से थोड़ा छोटा है, लेकिन मैं यहीं रुकना चाहता हूँ।



और मैं चाहता हूँ कि आप थोड़ा होमवर्क करें। मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में सोचें कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप अपने दिमाग को इस तरह की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भरें, जिसे हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में देख रहे हैं ताकि जब हम इन विवरणों को पढ़ें, तो आप इसे किसी ऐसी चीज़ से जोड़कर न देखें जिससे आप परिचित हैं।

लेकिन आप अपने परिवेश और रोमन कोरिंथ में जो कुछ चल रहा था, उसके बीच संबंध खोजने की कोशिश करें। अगर संभव हो तो पढ़ने की कोशिश करें। सर्दियों तक किताब को हासिल कर लें ताकि आप उन अध्यायों में से कुछ को पढ़ सकें और अपने दिमाग को इस पर केंद्रित कर सकें ताकि 1 कोरिंथियन में हम जिस नामकरण और व्यवहार संबंधी पहलुओं के बारे में पढ़ रहे हैं, वह पहली सदी की सेटिंग में समझ में आए, न कि 20वीं सदी की सेटिंग में, जहां आपने इसे इसके मूल संदर्भ से पूरी तरह से अलग कर दिया है।

निश्चित रूप से, कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो सामने आ सकती हैं, लेकिन वास्तव में इसमें जाने के लिए, हमें इसे उसी तरह से समझने की ज़रूरत है जैसे कि पॉल और उसके श्रोताओं के साथ हुआ था। जब हम अपने अगले सत्र में वापस आएं, तो हम अध्याय 4 के अंत तक 1 कुरिन्थियों 1:10 के पाठ को और अधिक विशेष रूप से देखेंगे, लेकिन हम लगातार 3:3 को वापस लाएंगे। आप धर्मनिरपेक्ष तरीके से सोच रहे हैं, धर्मनिरपेक्ष तरीके से सोच रहे हैं। खैर, पॉल के पास इससे बचने का रहस्य क्या था? वह रहस्य अध्याय 2:6 से 16 में है, और इसलिए मैं अगली बार आपके साथ वास्तव में कुछ समय बिताना चाहता हूँ।

मेरे नोट्स पढ़ें, हैंडआउट नंबर सात, मुझे लगता है कि यह नोटपैड नंबर सात है, इसे ध्यान से पढ़ें। और हम अपने अगले व्याख्यान में इस भाग को पूरा करने का प्रयास करेंगे। सुनने के लिए धन्यवाद।

इस बात को सहन करने के लिए आपका धन्यवाद। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना होमवर्क करें ताकि आप बाइबल के अनुसार सोच सकें।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 10 है, क्लो के घराने से मौखिक संचार के लिए पॉल की प्रतिक्रिया - अध्याय 1, श्लोक 10 से अध्याय 4, श्लोक 21 तक।